सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:6 **विषय: हिन्दी** **पाठ:4-नीलू**

बोलकर

(क) लूसी एक लकड़बग्घे का शिकार बनी। सर्दी में कुत्ते लकड़बग्घे की गंध नहीं पा सकते थे अतः वे उनका भोजन बन जाते थे। ऐसा ही लूसी के साथ भी हुआ।

(ख) लूसी एक तराशी हुई सुडौल मूर्ति के समान थी, जबकि भूटिया कुत्ता एक अनगढ़ शिलाखंड के जैसा था।

(ग) नीलू को अकेला इसलिए रहना पड़ा, क्योंकि उसकी माँ लूसी एक लकड़बग्घे का शिकार बन गई थी। अतः माँ के अभाव में वह अकेला पड़ गया।

(घ) लूसी गाँव वालों के लिए महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि जब सर्दियों में पहाड़ों के बीच की दूरी बर्फ से ढक जाती थी और पगडंडी का निशान भी नहीं बचता था, तब गाँव के लोग लूसी के गले में रुपया, सामग्री की सूची आदि बाँध देते थे। लूसी सारी बाधाओं को पार करके दुकान तक पहुँच जाती और सामान ले आती थी।

लिखकर

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) सर्दियों के दिनों में दुकानदार लूसी के गले से कपड़ा खोलकर रुपए, सूची आदि लेने के बाद सामान की गठरी उसके गले या पीठ से बाँध देता और फिर वह इस सारे बोझ के साथ बर्फीला रास्ता पार करती हुई लौट आती।

(ख) नीलू के पैर अल्सेशियन कुत्ते के पैरों के समान लंबे और पंजे भूटिया के समान मजबूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखूनों वाले थे। आँखें न काली थीं न भूरी।

(ग) एक बार लेखिका को मोटर दुर्घटना में जख्मी होने के कारण अस्पताल जाना पड़ा। नीलू ने जब लेखिका को घर में नहीं पाया तो उनके अभाव में उसने तीन दिन तक न कुछ खाया और न पिया।

(घ) नीलू एक स्वाभिमानी कुत्ता था। उसका स्वर इतना भारी और गूँजने वाला था कि रात्रि में उसका एक बार भौंकना भी शांत वातावरण को कँपा देता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) नीलू की कहानी उसकी माँ से इस प्रकार जुड़ी है कि एक के बिना दूसरी अधूरी रह जाती है। कहने का तात्पर्य है कि नीलू का रंग रूप तथा उसकी बहुत सी विशेषताएँ अपनी माँ से मिलती जुलती थीं। इसलिए नीलू को यदि अच्छी तरह जानना है तो पहले उसकी माँ लूसी की कहानी को जानना भी जरूरी है।

(ग) हाँ, हमें बिल्कुल लगता है कि जानवर भी भावनाएँ समझते हैं। इसलिए जब लेखिका मोटर दुर्घटना में घायल हुई, तब उनकी अनुपस्थिति में नीलू ने तीन दिन तक न कुछ खाया न पिया। और जब उसे अस्पताल लाया गया तो वह उन्हें देखने के लिए पलंग के चारों ओर घूमने लगा। और जब उसे तसल्ली हुई कि लेखिका ठीक है,तब जाकर वह उनके पलंग के नीचे जाकर बैठ गया।

पठित गद्यांश -

(क) पाठ - नीलू, लेखिका - महादेवी वर्मा

(ख) नीलू के बैठने का स्थान लेखिका के घर का बाहरी बरामदा था। वह वहाँ ऊपरी सीढ़ी पर बैठकर हर आने-जाने वाले को देखा करता।

(ग) किसी विशेष परिचित को आया देखकर वह धीरे-धीरे भीतर आकर लेखिका के कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो जाता।

(घ) कक्ष कमरा, द्वार- दरवाजा।